पुस्तकालय से है सिकंदरपुर की ख्याति

अमर उजाला ब्यूरो

गोहाना (सोनीपत), 7 सितंबर

गोहाना का गांव सिकंदरपुर माजरा लाला मुरारी लाल मूलचंद जैन धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित पुस्तकालय के कारण प्रदेश भर में जाना जाता है। देहात में अपने किस्म का यह अद्वितीय पुस्तकालय 20 अगस्त 1991 को राष्ट्र को समर्पित किया गया।

इसके संस्थापक महान स्वतंत्रता सेनानी व गांधीवादी स्वर्गीय बाबू मूलचंद जैन थे। इन्होंने अपने पिता की स्मृति में इसे बनवाया था। दूर-दराज के अनेक गांव इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

गोहाना से मात्र पांच किलोमीटर पूर्व दक्षिण दिशा में गोहाना-खरखौदा मार्ग पर स्थित इस गांव का इतिहास पुराना है। कहा जाता है कि यहां घोघर बाबा का निवास था, उस समय यहां जंगल था। घोघर बाबा पहुंचे हुए संत थे।

उनकी पूजा के लिए दूर-दराज से लोग आते थे और उनका आशीर्वाद लेते थे। घोघर बाबा ने जब अपने नश्वर शरीर का त्याग किया तो उनके शिष्य सिकंदर ने इनकी समाधि इसी जंगल में बनाई।

लोग इनकी मृत्यु के बाद भी समाधि से आशीर्वाद लेने के लिए आते रहे। धीरे-धीरे यहां लोगों ने झोपड़ियां डालकर रहना शुरू कर दिया। यह स्थान खेती करने वालों के लिए वरदान साबित हुआ और आबादी बढ़ती चली गई। यहां 400 घर ब्राह्मण जाति के हैं, शेष अन्य जातियों के लोग हैं। इनके जीवन यापन का जरिया खेती-बाड़ी है।

दो मंजिले पुस्तकालय भवन का क्षेत्रफल 500 गज है। इसमें एक हॉल, भंडार, दफ्तर नुमा कमरा और पुस्तकालय अध्यक्ष का कमरा है। एक बड़े कमरे को वाचनालय का रूप दिया गया, यहां साहित्यिक ग्रंथों महापुरुषों की जीवनियां, प्रसिद्ध कविताएं और उत्साहवर्धक लेखों का संग्रह और उभरते कवियों-कलाकारों के संकलन के अतिरिक्त सभी धर्मों की पुस्तकें व अन्य खोज सामग्री से संबंधित दुर्लभ ग्रंथ भी इस पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। सभी समाचार पत्र आते हैं।

पुस्तकालय की संचालित कमेटी के प्रधान, सचिव की निष्क्रिय भूमिका के कारण संस्थापक श्री जैन के सपने टूटने के कगार पर है। यदि समय रहते ट्रस्ट पदाधिकारियों ने उक्त कमेटी के पदाधिकारियों को न बदला तो इस पर बुरा असर पड़ सकता है।

खेड़ी दमकन, रंभड़ा, बड़ौता व माहरा गांव के बीच बसे इस गांव के लोग आपस में मिलजुल कर व सौहार्द से रहते हैं। लोग अपने झगड़ों को थाने व न्यायालय में ले जाने की बजाय गांव में ही पंचायत के माध्यम से निपटाते थे। यहां शिक्षा के नाम पर राजकीय बाबू मूलचंद जैन हाई स्कूल है, जहां आस-पास के गांव के बच्चे भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी भी है। तीन आंगनवाड़ी केंद्र भी चल रहे हैं।

इस गांव ने अब तक स्वतंत्रता सेनानी, वकील, कृषि वैज्ञानिक (गोल्ड मेडलिस्ट) प्राध्यापक, थानेदार, आबकारी व कराधान अधिकारी, पशुचिकित्सक, शिक्षक, पत्रकार, कैप्टन व सूबेदार जैसे लोग रह चुके हैं। गांव में नब्बे फीसदी साक्षर हैं।

downloaded from muchandjain.org